Multidisciplinary International Magazine
(Peer-Reviewed)
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 1.888
www.jankriti.com
Volume 6, Issue 69-70, Jan-Feb 2021

JANKRITI जनकृति

बहु-विषयक अंतरराष्ट्रीय पत्रिका
(विशेषज्ञ समीक्षित)
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 1.888
www.jankriti.com
वर्ष 6, अंक 69-70, जनवरी-फरवरी 2021

Jankriti I जनकृति Issue 69-70 I अंक 69-70

कोकना-कोकनी आदिवासी समाज के लोकवाद्य

कु निलेश शिवाजी देशमुख
(शोधार्थी) हिंदी विभाग
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी

सारांश

भारत के पश्चिम महाराष्ट्र में स्थित कोकना-कोकनी आदिवासी समाज पुराने समय से ही अपनी संस्कृति का संरक्षण करते रहा हैं। अपनी परम्परा के अनुरूप ही गीत, नृत्य करता नजर आता हैं। इन गीत, नृत्य में उनके हाथों से बनाये गए वाद्यो का स्थान सर्वोपरी हैं। सभी आदिवासी समुदायों में इस तरह हाथों से बनाये वाद्य बजायें जाते हैं। यह आदिवासी समाज की धरोहर हैं जो अब भी अपनी अस्मिता को और अस्तित्व को ज्यों का त्यों बनाये रखा हैं। कोकना आदिवासी समाज में प्रचलित संभल, पावरी, थाळगान, ढाका, नाल, चोनक्या, मंजीरा, हारमोनियम, डफली आदि वाद्य का उपयोग मौखिक गीत, गाथा, नृत्य में किया जाता हैं। इन वाद्यो में सुर, ताल, और लय की ध्वनि गुंजती हैं। इन वाद्यो की ध्वनि सुनने में मधुर और आकर्षक लगती हैं। इन वाद्यो का उपयोग लोकसंस्कृति से संबधित आदिवासी समाज में प्रतिष्ठित और प्रचलित तिज-त्यौहारों में दिखायी देते हैं।

बीजशब्द :- *अस्तित्व, अस्मिता, आदिवासी, लोकवाद्य, कोकना-कोकनी*

कोकना-कोकनी आदिवासी समाज के लोकवाद्य

आमुख

कोकना-कोकनी आदिवासी समाज यह मुख्यत: पश्चिम महाराष्ट्र के नासिक, धुलिया, नंदुरबार आदी क्षेत्र मे निवास करता हैं। उनकी अपनी संस्कृति हैं। यह संस्कृति लोकगीत, लोकनृत्य, लोककथा आदि के माध्यम से सामने आती हैं। लोकसाहित्य में जो लोकगीत, लोककथा और लोकनृत्य होता हैं। उनमे उनके प्रचलित लोकवाद्यो का बहुत महत्वपुर्ण स्थान हैं। यह आदिवासी समाज अपने तिज-त्यौहारों में अपने हाथो से बनाए वाद्यो का उपयोग करके यह कोकना आदिवासी समाज सुर, ताल, लय और संगीत के साथ नृत्य करते और गीत गाते खुश दिखाई देते हैं। आदिम काल से चली आ रही परम्परा का निर्वाह कर रहें हैं। इनके प्रमुख वाद्य इस तरह हैं। संभळ वाद्य, पावरी/तारपा, थाळगाण/बांसरथाळी, डफडी, ढाक, टाळ, ढोलकी, नाल, सुरपेटी, चोनक्या, (हारमोनीयम), टिपरिया (दांडीया) आदि। इन वाद्यो का इस्तेमाल उनके तिज-त्यौहारों एवं उत्सव में प्रयोग करते दिखायी देते हैं। इस समाज में डोंगरदेव उत्सव में पावरी/तारपा वाद्य, सुरथाली का तथा विवाह के तथा बैल पोला, गणपती विसर्जन आदि में संभल वाद्य का प्रयोग किया जाता हैं। तमाशा तथा अन्य त्यौहारो पर जागरण गोंधल में ढोलकी, हारमोनियम आदि का उपयोग पश्चिम महाराष्ट्र में आज भी बढी मात्रा में किया जाता हैं। इन वाद्यो के बिना यह उत्सव अधुरा माना जाएगा। कोकना आदिवासी समाज में ढ़ेर सारे उत्सव मनाए जाते हैं उनमें इन वाद्यों का सबसे बडा स्थान हैं। इनकी अपनी अलग सस्कृंति की विशेषता हैं। जो आज भी नाशिक, धुले, नंदुरबार तथा डांग जिले में अपनी संस्कृति को संजोकर रखा गया हैं।

संभलवाद्य:-

संभल वाद्य यह विवाह के अवसर पर चार दिन तक बजाया जाता हैं किन्तु हलदी के दिन और शादी के दिन यह रात को एक-दो बजे तक यह वाद्य बजाया जाता हैं। इनके साथ हि बैल - पोला में भी शाम को यह संभल वाद्य बजाया जाता हैं इसी तरह गणपती विसर्जन तथा अन्य छोटे-मोठे त्यौंहारो पर भी इसका उपयोग किया जीता हैं। इस वाद्य की धुंध पर वह ग्राम जन खुशी से नृत्य करते हैं। यह आदिवासी समाज कितने भी थकान से भरें हो पर वह थकान मिटाने के लिए जरुर नृत्य करते हैं। इस वाद्य के माध्यम से कई तरह की संगीत ध्वनि निकाली जाती हैं। और इसलिए इस वाद्य के ताल पर बच्चों से लेकर उनके पिता, दादा आदि एक साथ नाचते हुए दिखायी देते हैं। इनमें इस वाद्य की आकार की बात करते हैं। संभल वाद्य की रचना में दो छोटी पिपानी तथा एक बढा पिपा और संभल आदि मिलकर रहता हैं। यह चारों वाद्य अलग रहते हैं इसे कुल चार लोग बजाते हैं। इनमें अलग-अलग संगीत की ध्वनि लहरे बाहर निकलती हैं। इनमें संभल का आकार बडा होता हैं जो हाथों से लकडी के माध्यम से बजाया जाता हैं। यह दोनों पैरों के अंदर रखकर उपर से बजाया जाता हैं। और जो पिपानी रहती हैं वह मुँह से बजायी जाती हैं। वह ताड के पेड से बनाई जाती हैं। और जो नली रहती हैं उससे ध्वनी कम ज्यादा होती हैं वह भी ताड या साग के पेड से बनाते हैं। और आगे के भाग को स्टील या पितल को प्रयोग में लाकर गोल आकार दिया जाता हैं। इनमें छोटी पिपानी कम ज्यादा ध्वनि निकालती हैं। इससे अलग-अलग संगीत ध्वनि निकाली जाती हैं। और बढी पिपानी लगातार बजायी जाती हैं। इसी की मधुर ध्वनि पर सारे लोग समुह में गोल आकार करके नृत्य करते हैं। और अपनी थकान मिटाते हैं। इनमें स्री-पुरूष एक साथ में नृत्य करते हैं इनमें कुछ भी भेदभाव नही

किया जाता। कोकना-कोकनी आदिवासी समाज में ग्राम एवं शहरी दोनो जगह पर इसका इस्तमाल होता हुआ दिखायी देता हैं। वर्तमान में जो ग्राम के कुछ लोग शहर जाकर बसे हैं। उनके घर पर जब भी कोई उत्सव रहता हैं वह भी इन वाद्यो का इस्तेमाल करते है।

पावरी :-

कोकना आदिवासी समाज में डोंगरदेव एक प्रमुख उत्सव हैं इस उत्सव में पावरी का महत्वपुर्ण स्थान हैं। पावरी के बिना यह उत्सव अधुरा माना जाएगा। पावरी को कुछ जगह पर तारपा वाद्य भी कहा जाता हैं। जो आकार मे बढी हैं। पावरी यह वाद्ययंत्र एक ही आदमी बजाता हैं इनमें अलग - अलग संगीत की ध्वनि लहरी निर्मान होती हैं। जिस तरह मुरली बजायी जाती हैं और ध्वनि लहरे निकलती हैं। उसी तरह इसके भी ध्वनि की लहरे भिन्न-भिन्न सुनायी देती हैं। पुरे उत्सव में दो या तीन पावरकर रहते हैं जो पावरी बजाते हैं। यह मुँह से बजायी जाती हैं इसमें श्वास को रोककर रखना पडता हैं। और एक घंटे तक एक आदमी इसको बजा लेता हैं। इसकी रचना टेडी रहती हैं उप्पर छोटी और निच्चे की तरफ बढी होती जाती हैं। यह बनाने के लिए कद्दु (डवली), बैल का शिंग, मेन, दो बांबु की नलिया, रस्सी आदि सामग्री का इस्तमाल किया जाता हैं। इसके साथ ही जब माऊलिया नृत्य करती हैं तब डफली भी बजायी जाती हैं। पावरी वाद्य की ध्वनि रात को पाँच-पाँच मिल तक सुनायी देती हैं जिससे पास के गाँव वाले नृत्य करने के लिए वहा आते हैं।

सुरथाली/थाळगाण वाद्य:-

डोंगरदेव उत्सव में रात के वक्त नौं दिन तक सुरथाली/थाळगाण बजाते हैं एवं किसी व्यक्ति की मृत्यु के नौवे दिन सुरथाली के माध्यम से गाथा लगायी जाती हैं अपने पुर्वजो के नाम इसमें लिए जाते हैं। इसलिए सुरथाली का भी स्थान महत्वपुर्ण हैं। यह सुरथाली दो लोग बजाते हैं प्रथम जिसे कथकरी (गाथा लगाने वाला) कहा जाता हैं। और साथ में सुरथाली बजाता हैं तो दुसरा आदमी हुँकार भरता यानी सुर में सुर मिलाता हैं और गाथा लगाता हैं। इसे बांस के पेड से बनाया जाता हैं इसलिए कुछ जगह इस थाली को बांसरथाली भी कहा जाता हैं। इसकी रचना सीधी-साधी हैं। इसमें प्रथमत: पितल की थाली ली जाती हैं और उसमें कोती का मेन से बाँसर के पेड की छोटी लकडी सीधी चिपकायी जाती हैं जिसके उपर से हाथ घुमानें पर ध्वनि की लहरे उत्पन्न होती हैं। और सुनने में यह ध्वनि मधुर सुनाई देती हैं। इसको हाथ से उपर से निच्चे की तरफ लिया जाता हैं। इसके कंपन से संगीत की लहर बाहर निकलती हैं। और कथा गाणे वाला कथा या गाथा गाता हैं। इनमें कुछ छोटी-छोटी गाथाए भी लगायी जाती हैं। और कुछ बडी गाथाए भी लगायी जाती हैं जो आठ-आठ दिन तक एक ही गाथा चलती हैं। डोंगरदेव उत्सव में यही बडी गाथाए लगायी जाती हैं। यह गाथा अपने कुलदैवत के नाम से तथा कन्सरा देव, उन्हादेव के नाम से लगाते हैं।

ढाक वाद्य:-

ढाक या डेरू वाद्य भी कहा जाता हैं। यह दिखनें मे डमरू जैसा हैं पर आकार में बडा होता हैं। ढाक वाद्ययंत्र यह नवरात्र के समय रात को नौ दिन और विवाह के समय प्रथम दिन रात को घर्यादेव/घट्यादेव परिवार के देव के पास यह ढाका बजाते हैं और साथ ही वया लगाते हैं यानी कथा गाते हैं अपने पुर्वजो के नाम से इनमें पुर्वजों के नाम, इतिहास उनके कार्य आदि की गाथा लगाते हैं। कुछ जगह विधि के लिए बजाया

जाता हैं तो कुछ जगह पर मनोरंजन के लिए। कोकना आदिवासी समाज में गाँव में या किसी के परिवार में छोटा-मोटा कोई उत्सव हो तो उस जगह पर भी ढाक वाद्य के ध्वनि पर पुरी रात जागकर मनोरंजन किया जाता हैं। यह ढाक वाद्य साग के पेड और बकरे की चमडे से वर्तमाान में डफ के पान/फायबर से बनाते हैं यह एक पैर में बांधकर दोनो हाथो से बजाया जाता हैं एक हाथ में बजाने के लिए लकडी का प्रयोग करते हैं। और गाथा/कथा लगायी जाती हैं। यह वाद्य एक साथ ही दो या तीन पुरूष लोग बजाते हैं और बाकी लोग हुँकार भरते हैं। इनमें शराब का भी काफी उपयोग किया जाता हैं, घर के देवी-देवताओ पर छिडकने के लिए साथ ही ढाकभगत/ ढाक वादक और अन्य साथीयो को पिने के लिए इसका उपयोग होता हैं इसके बिना यह अधुरा माना जाता हैं। इसलिय जब कभी इस तरह आयोजन होता हैं। उसके पहले ही इसका इँतजाम किया जाता हैं यह महुआ की शराब का ज्यादा इस्तमाल करते हैं।

चोनक्या, हारमोनियम, ढोलकी, टाळ/ मंजीरा वाद्य :-

कोकना आदिवासी समाज में तमाशा यह लोकनृत्य बहुत पूराना हैं, और उतना ही प्रसिद्ध भी, इनमें जो नृत्य, गीत, गवलन गाते हैं। इसको सुर,ताल से बांधने के लिए जो वाद्य उपयोग मे लाया जाता हैं उनमें चोनक्या, हारमोनियम (सुरपेटी), टाळ, ढोलकी(नाल) आदि वाद्य बजाये जाते हैं। इसमें ढोलकी यह नृत्य और गीत के लिए महत्वपुर्ण मानी जाती हैं। इसकी ध्वनि मधुर और सुनने को बहुत अच्छी लगती हैं। ढोलकी को साग के पेड से और बकरे की चमडे से बनाते हैं। वर्तमान में प्लास्टिक का या फायबर का उपयोग किया जाता हैं। इसका उपयोग भजन, किर्तन के वक्त भी किया जाता हैं। साथ ही तमाशा लोकनृत्य एवं सोंगाड्या आदि में भी किया जाता हैं। टाळ यह एक रस्सी से बाँधकर एक-दुसरे पर टकराने से ध्वनि बाहर निकलती हैं। यह महाराष्ट्र में पंढरपुर, आळंदी जानेवाले सभी वारकरीयों के हाथो में दिखायी देती हैं। उसी तरह तमाशा, सोंगाड्या पार्टि में भी यह बजाते वक्त दिखाई देते हैं। चोनक्या यह वाद्य में भी लकडी का प्रयोग किया जाता हैं, उस लकडी के उपर-निच्चे तार जोडी जाती हैं। उसे छोटीसी लकडी से बजाया जाता हैं। जिससे संगीत की ध्वनि का कंपन होता हैं। और सुनने मे माधुर्य पुर्ण लगता हैं।

इसी तरह दांडिया (टिपरीया) का भी महत्व रहता हैं। यह गणेशउत्सव के दिनों में तथा विसर्जन के समय डफ, या संभल वाद्य पर नृत्य करते जाते हैं। इनमें पुरूष-स्त्री साथ में नृत्य करते हैं।

इस तरह कोकना-कोकनी आदिवासी समाज में मनोरंजन, उत्सव, तिज-त्यौहारों आदि में इनके हाथो से तयार किए वाद्यो का उपयोग किया जाता है। इन वाद्यो के बिना लोकगीत, लोकनृत्य अधुरा हैं। इन वाद्यो का उपयोग गाँव के छोटे-मोटे सभी उत्सव पर किया जाता हैं। इन वाद्य के माध्यम से इनके संगीत की ध्वनी उनके कर्ण पटल पर जोश उत्पन्न कर देती हैं। दिन भर यह आदिवासी समाज खेती में काम करता हैं और रात में खाना होने के बाद दिन की थकान मिटाने के लिए संभल वाद्यो पर नृत्य करते है। कुछ वक्त मनोरंजन में बीत जाता हैं। यह समाज समुह में रहता हैं इनमें स्त्री-पुरूष भेदभाव कही नजर नही आता यह इनकी अलग विशेषता हैं जो अन्य समाज मे कम दिखायी देती हैं। यह समाज नृत्य करते समय स्त्री-पुरूष साथ में नृत्य करते हैं।

सन्दर्भ सूची :-

१) भोये भाऊराव काशिराम , ग्राम मोहबारी तहसिल कलवण जिला नासिक, महाराष्ट्र उम्र ६५ (ढाकवादक) साक्षात्कार

२) भोये रफु धोंडीराम ,ग्राम मोहबारी तहसिल कलवण जिला नासिक, महाराष्ट्र उम्र ६० (पावरीवादक) साक्षात्कार

ग्राम मोहबारी, तहसिल कलवण,
जिला नासिक, महाराष्ट्र
दुरभाष नं - 9356456258, 9404787698
ईमेल -nileshd2112@gmail.Com